मध्य-पाषाणकालीन संस्कृति (Mesolithic Culture)

ईसा से लगभग 9000 ई. पू. महान् हिमयुग की समाप्ति एवं जलवायु के शुष्क हो जाने के बाद ही पुरा-पाषाण काल का अन्त एवं मध्य-पाषाण काल का उदय हुआ। **भारत में मध्य-पाषाण काल के बारे में जानकारी सर्वप्रथम 1867 ई. में जबकि सी. एल. कार्लाइल महोदय ने विन्ध्य क्षेत्र से लघु पाषाणोपकरण** (Microliths) **खोज निकाले।** इस काल में मानव पूर्व की तुलना में अधिक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र में फैला व जनसंख्या की दृष्टि से भी प्रगति हुई। मध्यपाषाण कालीन संस्कृति के प्रमाण प्रचुर मात्रा में देश के लगभग सभी भू-भागों से प्राप्त हुए हैं। उत्तर में जवालगढ़ी (पेशावर) से लेकर दक्षिण में सोवियाडर्म (जिला तिन्नेवेली) एवं पश्चिम में करांची (सिन्ध) से लेकर पूरब में सरायकेला (बिहार) तक के अनेक स्थलों से इस संस्कृति के साक्ष्य मिलते हैं।

शैल कला के विशेष सन्दर्भ में वितरण एवं सांस्कृतिक विकास
(CULTURAL DEVELOPMENT WITH SPECIAL REFERENCE TO ROCK ART)

भारत के मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्र मध्य पाषाणिक अवशेषों एवं शैल कला की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। 1964 **ई. में आर. बी. जोशी महोदय ने होशंगाबाद जिले में स्थित आदमगढ़ शिलाश्रय से लगभग 25,000 लघु पाषाणोपकरण प्राप्त किये।** म. प्र. के ही रायसेन जिले में **भीम बेटका** के शैलाश्रयों तथा गुफाओं से भी मध्य पाषाणकालीन संस्कृति के साक्ष्य (उपकरण) प्राप्त होते हैं। **इन गुफाओं की खोज 1958 ई. में बी. एस. वाकणकर महोदय ने की थी।**

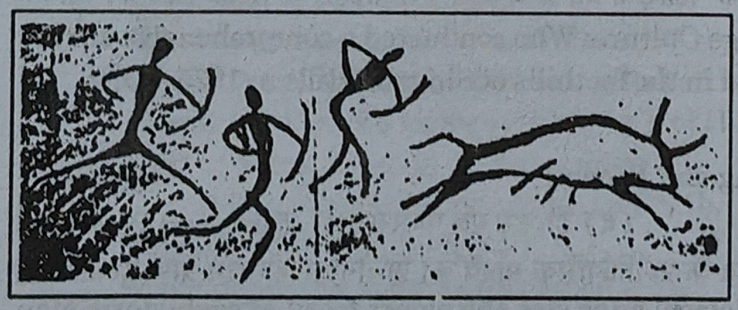

चित्र—प्रागैतिहासिक मानव द्वारा निर्मित जानवर का शिकार करता हुआ शैल चित्र

मध्य पाषाणकालीन संस्कृति के निर्माता गाय, बैल, हाथी, गैंडा, भैंस, सुअर, हिरण आदि जानवरों के अतिरिक्त कछुआ व मछली आदि जलीय जीवों का भी शिकार करते थे। इस काल के मानव का रुझान कला के

प्रति भी विकसित होता दिखायी देता है। शैल चित्र लाल, गेरुये, सफेद एवं भूरे रंगों में दृष्टिगोचर होते हैं। इन शैल चित्रों में आखेट की विभिन्न मुद्रायें, मत्स्य आखेट की कार्य शैली, खाद्य संग्रह व नृत्य सम्बन्धी चित्रों को रेखांकित किया गया है।

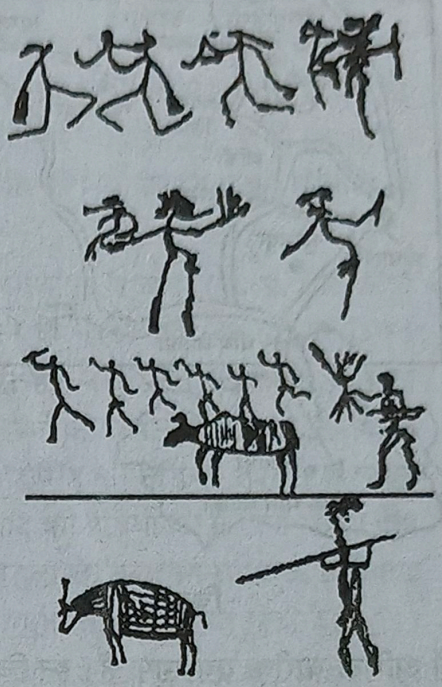

चित्र—मध्य पाषाण युगीन शैल चित्र

इलाहाबाद (उ. प्र.) का चोपानीमाण्डो पुरा-स्थल पन्द्रह हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला एक विस्तृत मध्य-पाषाणकालीन संस्कृति का क्षेत्र है। यहाँ विभिन्न मध्य-पाषाणकालीन उपकरणों के अतिरिक्त झोंपड़ियों के भी प्रमाण मिले हैं। कुछ हाथ के बने मिट्टी के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं।

सरायनाहर राय (उ. प्र.) में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष **जी. आर. शर्मा** एवं उनके सहयोगियों **आर. के. वर्मा** एवं **बी. डी. मिश्र** के द्वारा कराये गए उत्खनन में 14 शवाधान तथा 8 गर्त-चूल्हे (Pit hearths) भी प्राप्त हुए हैं। शवाधान मध्य-पाषाणकालीन मृतक संस्कार विधि पर प्रकाश डालते हैं। दफनाये गये शवों का सिर पश्चिम तथा पैर पूर्व की ओर हैं। उनके साथ पाषाण व अस्थि निर्मित उपकरण भी रखे गये हैं। चूल्हों से पशुओं की अधजली हड्डियाँ भी मिली हैं जो संकेत देती हैं कि चूल्हों का प्रयोग माँस भूनने में होता होगा। लखेनिया (उ. प्र.), भीम बेटका (म. प्र.), लांघनाज (गुजरात) एवं महदहा (जिला प्रतापगढ़) (उ. प्र.) से भी शव दफनाने सम्बन्धी साक्ष्य मिले हैं। कहीं-कहीं शव करवट लिये अवस्था में हैं। महदहा की एक कब्र में स्त्री-पुरुष को एक साथ दफनाया गया है। यहाँ भी शवों के साथ उपकरण एवं मृद्भाण्डों के साक्ष्य मिले हैं। **श्री आर. के. वर्मा के मतानुसार उपरोक्त तथ्य इंगित करते हैं कि इस युग में परिवार जैसी प्रथा शुभारम्भ हो चली थी।** महदहा से सिल एवं लोढ़े की प्राप्ति इस तथ्य को रेखांकित करती है कि इस काल में लोग घास के दानों को पीसकर खाने के काम में लाते होंगे।